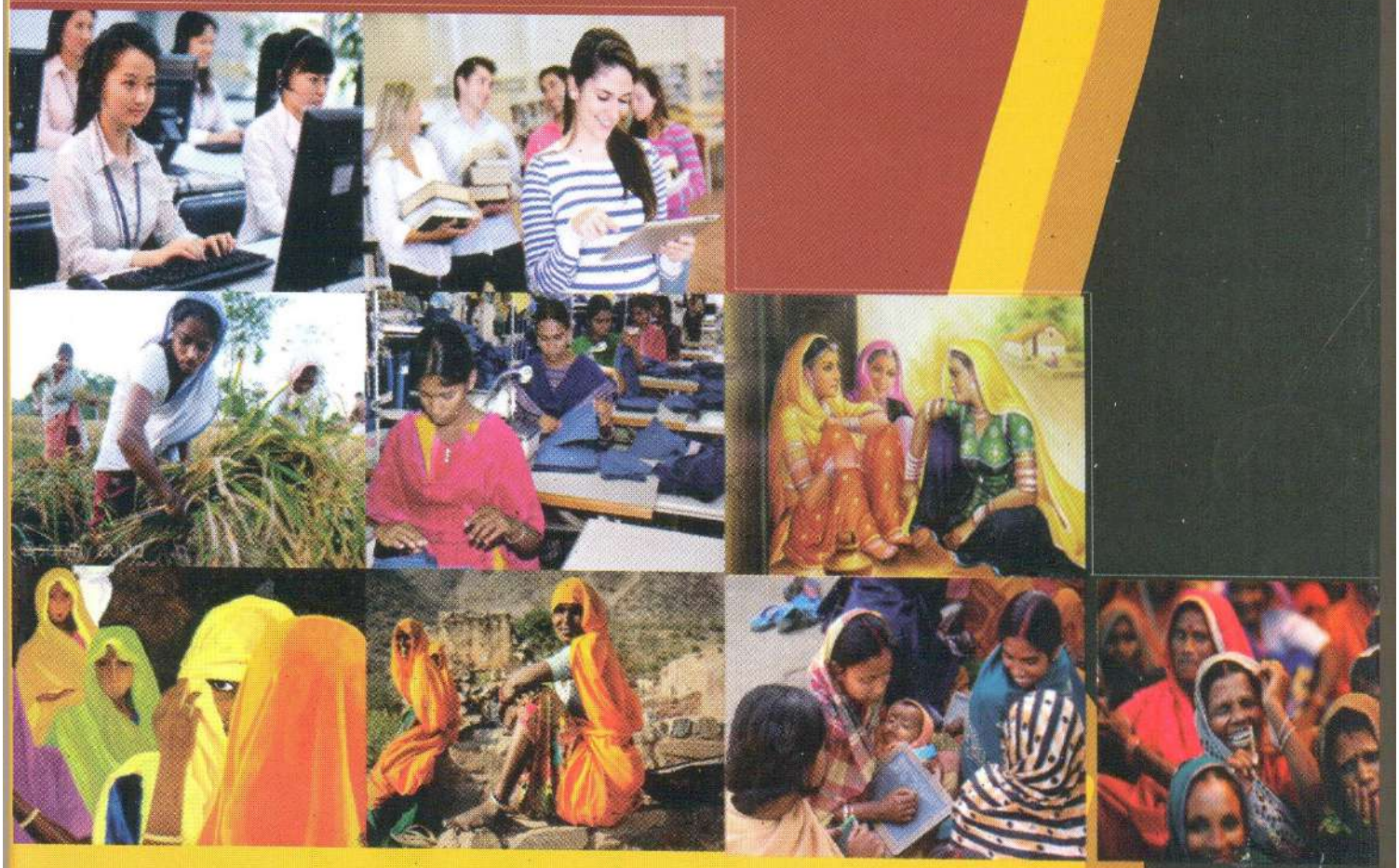
साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण



डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

प्रकाशकः
मंगलम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
के-129 3½ पुस्ता मेनरोड, नीयर ग्रीन वेल्स स्कूल,
गौतम विहार, दिल्ली-110053
फोनः 011-22945677, मो. 9868572512, 9968367559
Email: manglam.books2007@rediffmail.com
manglam.publishers@ rediffmail.com

साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण 2015
ISBN 978-93-82816-25-6
₹ 795/-

* इस पुस्तक का कोई अंश फोटो कापी सूचना संग्रह साधनों के माध्यम से उपयोग करने के पूर्व लेखक एवं प्रकाशक की लिखित सूचना अनिवार्य है।
* परिवाद यदि हो तो न्यायायिक क्षेत्र विलाशपुर (छ.ग.) ही होगा।
* पुस्तक में दी गई जानकारी प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोत के आधार पर लेखक द्वारा रचित है। जिसमें टंकड़ सम्बन्धी मानव भूल स्वाभाविक है। ध्यान दिलाने पर आगामी संस्करण में सुधार संभव है।
* किसी प्रकार के रचनात्मक सुझाव का स्वागत है।

भारत में मुद्रितः

रविन्द्र कुमार यादव द्वारा मंगलम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली-53 के लिए प्रकाशित एवं शहाबउद्दीन कम्प्यूटर, दिल्ली-द्वारा शब्द संयोजन तथा सचिन प्रिंटर्स, मौजपुर, दिल्ली-53 में मुद्रित।

अनुक्रमणिका

1. महिला सशक्तिकरण की अवधारणा : आवश्यकता और स्वरूप
   – डॉ. अनुसूया अग्रवाल (पृष्ठ क्र. 1–4)
2. महिला सशक्तिकरण : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं भावी दिशाएं
   – डॉ. एस.एल. सोनवाने (पृष्ठ क्र. 5–12)
3. धार्मिक ग्रंथ और स्त्री अस्मिता : सतयुग से साईबर युग तक
   – डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल' (पृष्ठ क्र. 13–20)
4. हिन्दी कविता में 'स्त्री लेखन और स्त्री अस्मिता'
   – डॉ. गोपीराम शर्मा (पृष्ठ क्र. 21–25)
5. हिन्दी कविता में नारी समाज –
   – प्रो. राजकुमार लहरे (पृष्ठ क्र. 26–32)
6. समकालीन कविता और स्त्री अस्मिता : स्त्री मुक्ति का विराट स्वप्न
   – डॉ. रामकिंकर पाण्डेय (पृष्ठ क्र. 33–41)
7. साहित्य में स्त्री विमर्श – डॉ. बी.आर. महिपाल (पृष्ठ क्र. 42–44)
8. पवन करण की कविता में स्त्री मन के भीतर के सौंदर्य की तलाश
   – डॉ. संजय राठौड़ (पृष्ठ क्र. 45–49)
9. नयी सदी का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श बनाम यौन विमर्श
   – डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे (पृष्ठ क्र. 50–62)
10. उदय प्रकाश की कहानियों में चित्रित नारी चेतना तथा संघर्ष
    – प्रा. विजय लक्ष्मण साठे (पृष्ठ क्र. 63–69)
11. साहित्य और समाज में महिला : मेहरून्निसा परवेज के कथा सहित्य के संदर्भ में – डॉ. रमेश टण्डन (पृष्ठ क्र. 70–71)
12. वैश्वीकरण के दौर में नारी चेतना – डॉ. आर.पी.टण्डन(पृष्ठ क्र. 72–75)
13. भारती समाज में महिला – प्रो. भुवन सिंह राज, प्रो. नवीन कुमार रेलवानी,
    – कु. प्रीति साहू (पृष्ठ क्र. 76–83)
14. महिला शिक्षा एवं अधिकारों के सजग प्रहरी
    – डॉ. एम.एल. पाटले (पृष्ठ क्र. 84–89)
15. नारी चेतना और निर्व्यक्तीकरण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
    – प्रो. जी.सी. भारद्वाज (पृष्ठ क्र. 90–93)
16. समाज की मुस्कान नार – डॉ. राजाराम बनर्जी (पृष्ठ क्र. 94–100)
17. साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण : चुनौती एवं संभावनाएं
    – डॉ. आर.बी. सोनवानी, प्रो. सुश्री मथुरा महिलांगे (पृष्ठ क्र. 101–104)
18. पंचायती राज व्यवस्था और महिला सशक्तिकरण

11

साहित्य और समाज में महिला :
मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य के संदर्भ में

डॉ0 रमेश टण्डन
(सहायक प्राध्यापक–हिन्दी)
महात्मा गांधी शास.महावि. खरसिया (छ.ग.)

तसलीमा नसरीन ने कहा है कि "लड़कियों की हीन मानसिकता बनाये रखना मानो समाज का नैतिक कर्त्तव्य है। अधिकतर लोग सोचते हैं कि लड़कियों के इनफीरियर हुए बिना परिवार नहीं टिकता। इसीलिए लंबाई में कम, मोटाई में कम, शिक्षा में कम, बुद्धि में कम लड़की को ब्याह कर घर में सामंजस्य बनाये रखा जाता है। वस्तुतः यह एक सच्चाई है कि लड़की का कद लड़के से छोटा, लड़की की शिक्षा लड़के से कम इसीलिए मांगी जाती है, ताकि लड़की की निम्न स्थिति बनी रहे"(1) यह इनकी सामाजिक स्थिति है। परन्तु "आधुनिक काल में शिक्षा प्रसार, आर्थिक जीवन में बढ़ती हुई स्वतंत्रता, पारिवारिक अधिकारों में वृद्धि, सामाजिक जागरूकता एवं नगरीकरण आदि के फलस्वरूप स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने लगी है। अपनी शक्ति और सामर्थ्य का उसे अहसास होने लगा है। परम्परागत स्त्री क्षेत्र से बंधे रहना, अब उसे स्वीकार नहीं। दिन–प्रतिदिन नये दृष्टिकोण को अपनाने में वह अभ्यस्त होती जा रही है। उनकी प्रतिष्ठा के नये पथ खुल गये हैं। वह कर्म, न्याय और समता पर आधारित साझा संस्कृति निर्माण के लिए प्रयत्नशील है। इसमें उसका सुन्दर, सुखद, भविष्य निहित है। इसीलिए वह उन प्रयत्नों को बरकरार रखे हुए हैं।"(2)

मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में स्त्री चेतना के संदर्भ में डॉ0 निर्मला हिरवे लिखती हैं– स्त्री लेखन को लेकर जो सामाजिक पूर्वाग्रह बने

हुए हैं, उनका भी जबर्दस्त दबाव देखा जा सकता है। साहित्य के सुसंस्त समाज में भी यह पूर्वाग्रह प्रचलित है कि स्त्रियाँ क्या लिख रहीं हैं ? उन्हें क्या और कैसा लिखना चाहिए ? ये स्त्रियाँ ऐसी क्यों लिखने लगी हैं ? उनके लेखन को सामाजिक संदर्भों में न देखकर लेखिका के व्यक्तिगत जीवन से जोड़कर देखा जाता है कि जरूर यह इस औरत की आत्मकथा होगी। वहाँ पुरूषों का लिखा हुआ सभी कुछ सामाजिक हो जाता है, लेकिन स्त्री का लेखन उसका निजी लेखा–जोखा बन जाता है। क्या ये साहित्य के सुशिक्षित समाज के पूर्वाग्रह नहीं है ? जब तक स्त्री समाज पर, पुरूष प्रधान समाज का अमानवीयकरण दबाव बना रहेगा, उसका मन व शरीर लहूलुहान घावों से रिसता रहेगा, तब तक स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता बढ़ती रहेगी।

सदियों से नारियों को रीति–रिवाजों, परम्पराओं के नाम पर पितृक मूल्यों के सांचों में जकड़ दिया गया है। पुरूष उन पर अपना वर्चस्व प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है, लेकिन औरतें न तो प्रभुत्व चाहती हैं, और न ही वर्चस्व, अपितु वे तो अपने स्वत्वाधिकारों, अस्मिता, गरिमा को चाहती हैं, ताकि उनके साथ जो पक्षपातपूर्ण, अछूतों, उत्पीड़ितों जैसा हिंसक असभ्य व्यवहार होता है, वह न हो। उनमें परस्पर सौहार्दपूर्ण मानवीय संबंधों की स्थापना हो सके। आधुनिक लेखिका मेहरून्निसा परवेज ने भारतीय आदर्शों को स्वीकारा भी है व बद्ध और जड़ मूल्यों के प्रति विद्रोह भी दिखलाया है। उनके कथा साहित्य में भारतीय और पाश्चात्य विचारधाराओं का समन्वयात्मक रूप दिखाई पड़ता है। उनके कथा–साहित्य के स्त्री–पात्रों में अपने अस्तित्व से जुड़े अंतर्विरोधों की तीखी एवं गहरी समझ है, उसका जबर्दस्त विरोध है।

उनके लेखन में तीखी प्रश्न आकुलता, तार्किकता विद्यमान है। सदियों से चली आ रही चुप्पी को तोड़ती हुई नारियाँ अपने अनुभवों एवं दुःखों को व्यक्त करने लगी हैं तथा पुरूष वर्चस्ववाद को चुनौती दी हैं। समकालीन नए प्रश्नों और चुनौतियों का सामना करते हुए उन्होंने बयान करने के नए तौर तरीकों को खोजा है। डॉ0 निर्मला हिरवे लिखती हैं कि "अभी इस दिशा में एक लम्बी बीहड़ संघर्ष की यात्रा तय करनी है।"(3)

संदर्भः–

1. राकेश कुमार, स्त्रीवादी विमर्श, पृश्ठ 63
2. हिरवे, डॉ. निर्मला, मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में स्त्री चेतना (प्राक्कथन)
3. ————वही————,पृष्ठ 217